मोना
अर्थशास्त्र विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय
वर्ग- बी.ए. **-2**
विषय-बचत-विनियोग सिद्धान्त
दिनांक: **12/04/2021**

बचत-विनियोग सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन मार्शल, वालरस, पीगू, मिल आदि अर्थशास्त्रियॅ ने किया । इस सिद्धान्त को बचत-विनियोग सिद्धान्त भी कहा जाता है । इस सिद्धान्त के अनुसार ब्याज की दर का निर्धारण पूँजी की माँग एवं पूँजी की पूर्ति द्वारा होता है । इसीलिए इस सिद्धान्त को 'ब्याज का माँगपूर्ति सिद्धान्त' भी कहा जाता है ।

पूँजी की माँग **(Demand for Capital):**

पूँजी की माँग उत्पादक वर्ग द्वारा विनियोग करने के उद्देश्य से की जाती है । पूँजी की माँग पूँजी की उत्पादकता के कारण उत्पन्न होती है । यही कारण है कि पूँजी की माँग पूँजी की सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर करती है । उत्पादन में जैसे-जैसे पूँजी की अतिरिक्त इकाइयॅ का प्रयोग किया जाता है उत्पत्ति ह्रास नियम के कारण पूँजी की सीमान्त उत्पादकता घटती जाती है ।

घटती सीमान्त उत्पादकता के कारण पूँजी की माँग एवं ब्याज दर में ऋणात्मक सम्बन्ध होता है जिसे चित्र 1 में DD वक्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है । ब्याज दर OR पर पूँजी की माँग ON है । जब ब्याज दर बढ़कर OR1 हो जाती है तब पूँजी की माँग घटकर ON1 रह जाती है तथा जब ब्याज दर घटकर OR2 रह जाती है तब पूँजी की माँग बढ़कर ON2 हो जाती है ।

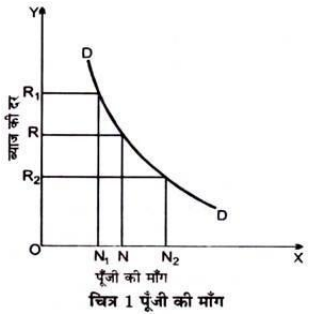

चित्र 1 पूँजी की माँग

पूँजी की पूर्ति **(Supply of Capital):**

सम्पूर्ण समाज की बचत को पूँजी की पूर्ति कहा जाता है । पूँजी की पूर्ति समाज में बचत की मात्रा पर निर्भर करती है । बचत करने के लिए समाज के व्यक्तियॅ को वर्तमान उपभोग का परित्याग करना पड़ता है जिसके लिए उसे ब्याज रूपी पुरस्कार की आवश्यकता पड़ती है ।

यदि बचत करने वाला व्यक्ति पुरस्कार के रूप में ब्याज प्राप्त नहीं करता तब वह बचत करके पूँजी की पूर्ति उपलब्ध नहीं करता । ब्याज और पूँजी की पूर्ति में कार्यात्मक सम्बन्ध (Functional Relation) होता है ।

ब्याज की दर ऊँची होने पर पूँजी की पूर्ति अधिक होती है और ब्याज की दर नीची होने पर पूँजी की पूर्ति घटती है । यही कारण है कि चित्र 2 के अनुसार पूँजी का पूर्ति वक्र SS बायें से दायें ऊपर की ओर चढ़ता हुआ होता है ।

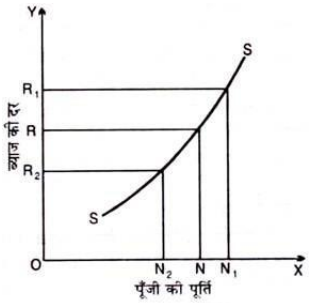

चित्र 2 पूँजी की पूर्ति

ब्याज की दर OR पर बचतकर्ता ON पूँजी की पूर्ति देते हैं । ब्याज की दर के बढ़कर OR1 हो जाने पर पूँजी की पूर्ति बढ़कर ON1 हो जाती है क्यअँकि ऊँची ब्याज दर पर लोग अधिक बचत करते हैं । इसके विपरीत, ब्याज की दर घटकर OR2 हो जाने पर पूँजी की पूर्ति ON2 तक घट जाती है क्यअँकि ब्याज दर घटने पर लोग कम बचत करते हैं ।